हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

5 मार्च, 1973

खण्ड 1, अंक 1

अधिकृत विवरण

विषय सूची

सोमवार, 5 मार्च, 1973

पृष्ठ संख्या

सदन की मेज पर रखा गया राज्यपाल का अभिभाषण	(1)1
अध्यक्ष द्वावा घोषणा चौधरी दल सिंह की रिहाई के सम्बन्ध में	(1)14
सभापतियों की तालिका	(1)14
याचिका–समिति	(1)14
सचिव द्वारा घोषणा	(1)15
शोक प्रस्ताव	(1)15
सदन की मेज पर रखे जाने वाले कागज पत्र	(1)24
सदन की मेज पर पुनः रखे जाने वाले कागज पत्र	(1)25

हरियाणा विधान सभा

सोमवार, 5 मार्च, 1973

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान सदन, सैक्टर 1, चण्डीगढ़ में मध्यान्होपरान्त 3.30 बजे हुई। अध्यक्ष (श्री बनारसी दास गुप्ता) ने अध्यक्षता की।

राज्यपाल का अभिभाषण

(सदन की मेज पर रखी गई प्रति)

श्री अध्यक्षः माननीय सदस्यगण, मैं सादर सदन को सूचित करता हूं कि संविधान के अनुच्छेद 176(1) के अधीन राज्यपाल महोदय ने 5 मार्च, 1973 को 2 बजे मध्याहन पश्चात् हरियाणा विधान सभा के सामने अभिभाषण देने की कृपा की तथा राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की एक प्रति सदन की मेज पर रखता हूं।

मित्रो,

मुझे इस वर्ष के विधान सभा के प्रथम सत्र में आपका स्वागत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है और मैं इस

महत्वपूर्ण कार्य में, जोकि आपके सम्मुख हैं, आपकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

जैसा कि सदस्यों को ज्ञात है, सरकार कल्याणकारी राज्य की स्थापना करने के लिए वचनबद्ध है। इसका अर्थन केवल गरीबी को दूर करना है, जिसे देश ी परिस्थितियों के सन्दर्भ में अनिवार्यतः परम् अग्रता दी जानी चाहिए, अपितु उन बुनियादी आवश्यकताओं कि व्यवस्था करना भी है जिनके अभाव में जीवन का कोई भी प्रयोजन नहीं रह जाता। पेयजल, खुराक, वस्त्र, मूल चिकित्सा सुविधाओं और शिक्षा की व्यवस्था करना, तथा सामाजिक विषमताओं को दूर करना, कुछ ऐसी बातें हैं, जिनकी और सरकार रिनन्तर ध्यान दे रही है। इसका उद्देश्य लोगों के सामान्य जीवन स्तर को ऊंचा उठाने और उसके परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने की दृष्टि से आर्थिक शक्ति के केन्द्रीयकरण को रोकना, आय तथा पूजी की विषमताओं को कम करना और संतुलित प्रादेशिक विकास करना भी है। ऊपर बताये गये उद्देश्यों की दृष्टि से वर्ष 1972–73 को हरियाणा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण समझा जाना चाहिये। जैसा कि सदस्यों को विदित है, हरियाणा ने भूमि–सुधारों के क्षेत्र में पहल की है। हरियाणा विधान सभा ने पंजाब पट्टेदारी सुरक्षा अधिनियम, 1953 और पैप्सू पट्टेदारी तथा कृषि–भूमि अधिनियम, 1955 का विलय करके हरियाणा भूमि–सीमा बिल, 1972 को अक्तूबर, 1972 में पास कर दिया था जिसे दिसम्बर, 1972 में भारत के राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हो गई।

आशा की जाती है कि इस अधिनियम के अधीन लगभग एक से डेढ़ लाख एकड़ तक भूमि फालतू घोषित हो जायेगी, जिसे इस नियम के उपबन्धों के अनुसार स्कीम को अधिसूचित करने के पश्चात्, लगभग 20000 परिवारों को बसाने के लिये प्रयोग में लाया जायेगा। इस विधान के दूर व्यापी सामाजिक तथा आर्थिक प्रभाव होंगे और आशा है कि यह भूमि सम्पदा के क्षेत्र में आर्थिक विषमताओं को अल्पकाल से दूर करने में सहायक सिद्ध होगा।

एक और बहुत महत्वपूर्ण प्रगति, 30 नवम्बर, 1972 को यात्री सड़क परिवहन का पूर्ण राष्ट्रीयकरण करना था जबकि शेष मर्गों का भी राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इस प्रकार हरियाणा, देष में यात्री सड़क परिवहन की पूर्ण राषट्रीयकरण करने वाला दूसरा राज्य बन गया। (तालियां) दीर्घकालीन प्रयत्नों के पश्चात् पैप्सू सड़क परिवहन निगम को भी पुनर्गठित करवाया गया तथा राज्य सरकार के हिस्से के वे मार्ग प्राप्त किये गये जिन पहले निगम की बसें चलती थी। राज्य सरकार को, भारत सरकार द्वारा अंतिम रूप दिये गये प्रबन्धों के अनुसार, निगम की परिसम्पतियों में से ीाी अपना उचित हिस्सा प्राप्त होगा। इन महत्वपूर्ण उपलब्धियों के परिणामस्वरूप, हरियाणा परिवहन की बसें अब लगभग 3 लाख किलोमीटर सड़कों पर चलती हैं और प्रतिदिन उनमें लगभग 2 1/2 लाख व्यक्ति यात्रा करते हैं। बसों की संख्या जो 31 मार्च, 1972 को 1217 थी, उसके 1972–73 के अन्त में 1400 से भी अधिक हो जाने की संभावना है। हरियाणा

परिवहन देश के अत्यन्त कुशल और दोष–रहित परिवहन के रूप में कार्य करता रहा।

सरकार ग्राम्य क्षेत्रों में पेय जल की सुविधाओं की व्यवस्था को बहुत महत्व देती है। विभिन्न स्कीमें तेजी और प्रभावकारी ढंग से क्रियान्वित की गई। चालू पंचवर्षीय योजनार के प्रथम चार वर्षों के दौरान 350 गांवों को पेय जल की सुविधायें प्रदान की गई और इस प्रकार कुल 529 गांव जल सप्लाई व्यवस्था के अर्न्तगत आ गये। ग्राम्य जल सप्लाई के लिये केन्द्र संचालित त्वरित कार्यक्रम के अर्न्तगत 130 अन्य गांव लाये जा रहे हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए, कि इस मूल आवश्यकता पर बंहुत कम ध्यान दिया गया था और स्वतन्त्रता प्राप्ति के कई वर्ष पश्चात् तक भी बहुत से क्षेत्रों में पेय जल की सुविधा नहीं थी, लगभग 4 वर्ष के अल्पकाल में अब तक की गई प्रगति महत्वपूर्ण है, यद्यपि यह मानना पड़ेगा कि धन के अभाव में अन्य गांवों को यह सुविधा प्रदान नहीं की जा सकी।

चालू वर्ष के दौरान चिकित्सा सुविधाओं में भी महत्वपूर्ण वृद्धि तथा सुधार लाया गया। जिला तथा तहसील स्तर पर 34 हस्पतालों में से 28 हस्पतालों मे विशेषज्ञ सेवाओं, ऐक्स–रे तथा प्रयोगशाला सुविधाओं आदि की व्यवस्था करके उन्हें आधुनिक बनाया गया। प्रबन्ध को उतम बनाने के लिए सरकार ने स्थानीय निकायों के 45 हस्पतालों तथा डिस्पैसरियों को अपने अधिकार में ले किया। 20 हस्पतालों के लिए नये भवनों का

निर्माण आरम्भ किया गया और 11 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों को नये भवनों में लाया गया। 1972–73 के अन्त तक सिविल हस्पतालों में शयया संख्या 6402 होने की संभावना है, जबकि 1967–68 में यह संख्या 5064 थी। वर्ष 1968 में राज्य में चिकित्सा सुविधाओं पर प्रति व्यक्ति खर्च 5 रूपये था, जबकि अब यह 10 रूपये हो गया है। इसी प्रकार गत 5 वर्षों में दवाइयों पर प्रति व्यक्ति खर्च 21 पैसे से बढ़कर 80 पैसे हो गया है। मैडिकल कालेज, रोहतक को आधुनिक बनाने के लिए इसका बहुत तेजी से विकास किया जा रहा है। परिवार नियोजन कार्यक्रम संतोषजनक ढंग से क्रियान्वित किये जा रहे हैं।

शिक्षा सुविधाओं का सभी स्तरों पर विस्तार किया जा रहा है। वर्ष 1972–73 के दौरान 400 नये प्राइमरी स्कूल खोले गये जबकि 1971–72 में 300 नये प्राइमरी स्कूल खोले गये थे। छः से ग्यारह वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए स्कूल प्रवेश अभियान सफलतापूर्वक चलाया गया और एक लाख चार हजार अतिरिक्त बच्चों का स्कूल में दाखिला कराया गया। तीन सौ अथवा इससे अधिक जनसंख्या वाले सभी क्षेत्रों मै सिलसिलेवार प्राइमरी स्कूल खोलने का निर्णय किया गया। प्राइमरी श्रेणियों मे अध्यापक छात्र अनुपात को भी 1:50 से घटा कर 1:35 कर दिया गया है। निर्धन परिवारों के प्रतिभाशाली बच्चों को अनेक छात्रवृतियां दी जाती रही। उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में, कुरूक्षेत्र

विश्वविद्यालय को पूर्ण प्रोत्साहन दिया गया। छात्र अनुशासन में भी पर्याप्त सुधार हुआ है।

यह गर्व का विषय है कि खाद्याय उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने में हरियाणा ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कुछ वर्षों की अवधि में, हरियाणा की अर्थ–व्यवस्था में इतना परिर्वतन आयसा है कि कमी वाले राज्य के स्थान पर अब यह बहुतायत वाला राज्य बर गया है। राज्य में खाद्यानोंका कुल उत्पादन 1966–67 में 26 लाख टन था, जो वर्ष 1971–72 में बढ़कर 47 लाख टन हो गया है। आशा की जाती है कि यह राज्य 50 लाख टन कुल प्रत्याशित उत्पादन में से 15 लाख टन से भी अधिक खाद्यान केन्द्रीय भांडार में दे सकेगा। ऐसा राज्य के कुछ भागों में सूखा पड़ने के बावजूद संभव होगा। देश के कमी वाले राज्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने तथा उत्पादकों के लिए उचित दाम सुनिश्चित करने के वास्ते अधिशेष खाद्यानों की अधिप्राप्ति के कार्य को तेज कर दिया गया है। वर्ष 1972–73 के दौरान 8 लाख, 18 हजार टन गेहूं खरीदी गई, जबकि 1971–72 के दौरान 7 लाख 9 हजार टन गेहूं खरीदी गई थी। हरियाणा राज्य गेहूं तथा चावल के केन्द्रीय भंडार के मुख्य अंशदायियों में से एक है। वर्ष 1971 की खरीफ की फसलें से भी 3 लाख 11 हजार टन चावल खरीदा गया था ओर खरीफ, 1972 की फसल से भी 3 लाख टन चावल खरीदे जाने का अनुमान है। जुलाई, 1972 मे ंगेहूं तथा उसके आटे के मूल्य में पाई गई उतरोतर वृद्धि को

रोकने के लिए, राज्य में शहरों मे 744 और देहातों मे 2337 उचित मूल्यों की दुकानों के माध्यम से उपभोक्ताओं को ठीक दरों पर गेहूं का आटा देने के लिए पर्याप्त प्रबन्ध किये गये। भारत सरकार के निर्णय के अनुसार, राज्य सरकार आगामी रबी फसल से गेहूं और आगामी खरीफ फसल से चावल का थोक व्यापार अपने हाथ में लेने के उपाय कर रही है। इस नीति की कार्यान्विति से खाद्यानों के व्यापार में सरकारी एजेंसियों का प्रमुख भाग होगा और बिचौलिये शीघ्र ही समाप्त हो जायेंगें ऐसा करने से, उत्पादकों के लिए लाभकारी मूल्य और उपभोक्ताओं के लिए उचित मूल्य पर खाद्यान की सप्लाई सुनिश्चित हो जायेगी। राज्य की भंडार क्षमता में वृद्धि करने का अभियान उत्साहपूर्वक चलता रहा और आश की जाती है कि 1972–73 के अन्त में राज्य के विभिन्न विभागों तथा संस्थाओं द्वारा निर्मित गोदामों की कुल भंडार क्षमता 6 लाख 80 हजार टन हो जायेगी, जबकि 1971–72 के अन्त में यह क्षमता 2 लाख 30 हजार टन ही थी। खाद की खपत निरन्तर बढ़ती रही और 1972–73 के दौरान 5 लाख टन खाद की खपत होने की संभावना है, जो कि प्रति हैक्टेयर कृष्य–क्षेत्र के लिए औसतन 135 किलोग्राम होगी, जबकि 1966–67 में वह औसत 18 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की थी। कपास, गन्ने और सरसों की फसलों पर विमानों द्वारा कीटनाशक दवाइयों को छिड़कने का कार्य भी बड़ पैमानपे पर आरमी किया गया। राज्य में लघु सिंचाई कार्यों की स्थापना के लिए सांस्थानिक ऋण का पर्याप्त लाभ उठाया जा रहा है और 1972–73 के अन्त तक 8

करोड़ 45 लाख रूपये की राशि का उपयोग किये जाने की संभावना है, जबकि 1971–72 में यह राशि 7 करोड़ 12 लाख रूपये थी। इसके परिणामस्वरूप लघु सिंचाई के अधीन 1972–73 में 6 लाख 73 हजार हैक्टेयर क्षेत्र होने की संभावना है, जबकि 1971–72 में यह क्षेत्र 5 लाख 91 हजार हैक्टेयर था। अम्बाला और गुड़गांव में लघु कृषक विकास एजेंसियां तथा अम्बाला और भिवानी में सीमांत कृषक एवं भूमिहीन कृषि मजदूर एजेंसियां, राज्य के कृषकों की बहुमूल्य सेवायें करती रही हैं। जींद और सोनीपत जिलों में बहुफसली मार्गदर्शी परियोजनाओं, हिसार और महेन्द्रगढ के जिलों मे शुष्क भूमि कृषि विकास परियोजनाओं और हिसार जिले में सघन कपास जिला कार्यक्रम का प्रभाव उतम रहा है।

हरियाणा कृषि–विश्वविद्यालय, हिसार को देश की एक सर्वोतम संस्था के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके वैज्ञानिक राज्य के लिए उपयुक्त, फसलों की बेहतर किस्मों तथा शस्य विज्ञान प्रणालियों के विकास के अनुसंधान में लगे हुए हैं।

नियन्त्रित कपड़े के वितरण की व्यवस्था करने हेतु सरकार ने उचित मूल्य की 118 दुकानें खोल दी हैं। अन्य आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था के लिए भी ऐसे प्रबन्ध किये गये हैं ताकि उनकी कमी न हो।

डेरी–विकास के क्षेत्र में राज्य ने मुख्य रूप से प्रगति की है। हरियाणा डेरी विकास निगम की जनवरी, 1970 मे स्थापना की गई और 3 वर्षों की इस अल्पावधि के दौरान, इसने प्रशंसनीय कार्य किया है। जींद तथा भिवानी के दो दुग्ध संयंत्र मुकम्मल हो चुके हैं, तथा अम्बाला में तीसरे संयंत्र के शीघ्र ही चालू हो जाने की संभावना है। भारतीय डेरी निगतम ने, दिल्ली महानगर के दुग्ध संग्रहण क्षेत्र में डेरी विकास हेतु विश्व खाद्यान्न कार्यक्रम के अधीन, हरियाणा के लिये 3 करोड़ 82 लाख रूपये की राशि नियत की है। आगामी योजना अवधि के दौरान अनेक दुग्ध संयंत्रों का जाल बिछ जायेगा तथा इससे छोटे किसानों, भूमिहीन श्रमिकों तथा सीमांत किसानों के लिये अतिरिक्त आय के नये मार्ग खुल जायेंगे, जिनकी सहकारी दुग्ध सप्लाई समितियों के अधीन उतम नसल के दुधारू पशु प्राप्त करने के लिये कर्जो द्वारा सहायता की जा रही है। उनके वास्तेर राज्य में पहले ही 200 से अधिक दूध सप्लाई समितियां स्थापित की जा चुकी हैं, जिनमें से 80 समितियां, जींद दुग्ध संयंत्र के आस–पास ही है।

सहकारी आन्दोलन की प्रगति सभी क्षेत्रों में सन्तोषजनक रही हे। अब सहकारी संस्थाओं के माध्यम से साधन जुटाने के लिए अधिक प्रबल प्रयास किये जाने का प्रस्ताव है। जून, 1972 मे समाप्त होने वाले सहकारी वर्ष के दौरान विभिन्न सहकीर संस्थाओं के माध्यम से कृषि ऋण के रूप में कुल 26 करोड़ 46 लाख रूपये दिये गये, जबकि इससे पहले वर्ष में 25

करोड़ 60 लाख रूपये दिये गये थे। पानीपत सहकारी चीनी मिल ने एक आधुनिक डिस्टिलरी स्थापित की है और करनाल तथा सोनीपत में दो नई सहकारी चीनी की मिलें लगाने के लिये लाइसैंस प्राप्त कर लिये गये हैं। हरियाणा राज्य सहकारी सप्लाई तथा माकिटिंग फैडरेशन, तरावड़ी में दानेदार खाद का संयंत्र लगाने की कार्यवाही कर रही है।

चाहे राज्य में बहुत अधिक बन नहीं है, तथापि 576 हैक्टेयर क्षेत्र में और सड़कों नहरों तथा रेल मार्गों के साथ–साथ 5720 पंक्ति किलोमीटर में पौधे लगाकर वन–साधनों के विकास की दिशा में प्रयत्न किये गये। वनरोपण, भू–संरक्षण एवं भूमि उद्धार के समकित कार्यक्रम के निष्पादन की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा। अन्य जीव संरक्षणकी ओर भी उचित ध्यान दिया गया। काले तीतर को राज्य–पक्षी घोषित कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त हिरनों की सभी किस्मों तथा कुरंग को पूरा–पूरा संरक्षण दिया गया है। वन्य जीव संरक्षण के उपायों के रूप में दो वर्षों की अवधि के लिए रोहतक तथा गुडगांव जिलों, में भूरे तीतर तथा अन्य जल पक्षियों के शिकार पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

सरकार के समक्ष एक उद्देश्य यह है कि संतुलित क्षेत्रीय विकास किया जाये। सूखा–ग्रस्त क्षेत्रों को राहत देने के लिए गत वर्षों मे पर्याप्त राशि की गई हैं। अनुभव किया गया है कि इस तदर्थ दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप धन की पर्याप्त हानि ही होती है, और इससे समस्या का कोई स्थाई समाधान भी नहीं

होता। अतः इस समस्या के स्थाई समाधान के लिए विभिन्न उइान सिंचाई स्कीमें तैयार करके सरकार ने चिरकालिक सूखा ग्रस्त क्षेत्रों की और विशेष ध्यान दिया हैं इन स्कीमों के निष्पादन से कम समय मे ही देहातों में क्रांति आ गई है। जुई उठान सिंचाई स्कीम, नवम्बर, 1969 में चालू की गई थी तथा इसके बाद इंदिरा गांधी नहर और बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती नहर का कार्य शीघ्र ही चालू किया गया। इन तीन नहरों से 1972 में 29000 एकड़ से अधिक भूमि की सिंचाई की गई। आयवर्धन नहर परियोजना के चालू हो जाने के पश्चात् 28 जनवरी, 1973 से जुई नहर को बारहमासी बना दिया गया है। रावी–बयास से फालतू जल के उपलब्ध होने पर अन्य दो नहरों को भी बारहमासी बना दिया जायेगा। इन तीनों नहरों के पूर्ण रूप से विकसित हो जाने पर 2 लाख 95 हजार एकड़ भूमि की सिंचाई होने की आशा की जाती है। (जुई नहर 41000 एकड़, इंदिरा गांधी नहर 164000 एकड़ तथा बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती नहर 90000 एकड़)। इन स्कीमों के अन्तर्गत नहरी कृष्य क्षेत्र 4 लाख 74 हजार एकड़ हो जायेगा। तहसील झज्जर में 36000 एकड़ सूखा ग्रस्त क्षेत्र की सिंचाई के लिये, सरकार ने एक करोड़ रूपये की लागत वाली झज्जर उठान सिंचाई स्कीम पर कार्य ीाी आरम्भ किया है। लगभग 30 करोड़ रूपये की लागत वाली एक अधिक महत्वाकांक्षी परियोजना पंडित जवाहर लाल नेहरू उठान सिंचाई स्कीम, जो इस समय भारत सरकार के विचाराधीन है, तथा हमें आश है कि यह शीघ्र मंजूर हो जायेगी, के मुकम्मल होने पर रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़ तथा नारनौल

के आस–पास लगभग 3 लाख 55 हजार एकड़ भूमि की सिंचाई होगी। इस स्कीम के अन्तर्गत नहरी कृष्य क्षेत्र 5 लाख 73 हजार एकड़ हो जायेगा।

दिल्ली शाखा तथा दिल्ली पुच्छ रजबाहे को पक्का करने के लिए लगभग 13 करोड़ रूपये की लागत वाली आवर्धन नहर परियोजना तैयार की गई, जिसके द्वारा तल तथा भूगत जल स्त्रोंतों का एक साथ प्रभावशाली ढंग से उपयोग यिका जाना है। परियोजना के मुख्य निर्माण कार्य एक वर्ष की रिकार्ड अवधि में ही मुकम्मल कर लिय गये थे। इस परियोजना का उद्घटन 10 जनवरी, 1973 को श्री डी.पी. धर, केन्द्रीय योजना मंत्री द्वारा किया गया। इस परियोजना से न केवल चिरकाल से सूखाग्रस्त क्षेत्रों को पानी ही मिलेगा, अपितु उन क्षेत्रों की, जहां गहरे नलकूप लगाये गये है, सेम की समस्या का समाधान भी हो जायेगा। सरकार का पुच्छ अवार्धन नहर से मूनक तक एक पक्के जल मार्ग के निर्माण का प्रस्ताव भी है। यह जल मार्ग हरियाणा के हिस्से के रावी ब्या जल को पश्चिमी यमुना नहर में ले जाने के लिये, वाहन–प्रणाली का एक अंग भी होगा। इस परियोजना पर संभवतः 3 करोड़ रूपये की लागत आयेगी और आशा है कि इसका आरम्भ अगले वर्ष हो जायेगा। जुई, इंदिरा गांधी, बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती तथा प्रस्तावित पंडित जवाहर लाल नेहरू नहरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पश्चितमी यमुना नहर प्रणाली की दो प्रमुख शाखाओं हांसी शाखा तथा दिल्ली शाखा की क्षमता को बढ़ाया

जा रहा है। प्रस्तवावित पानीपत थर्मल प्लांट के लिये, हांसी शाखा और दिल्ली शाखा, मूनक निकास तथा वाहक जल मार्ग के नये प्रधान नियामकों का निर्माध इस वर्ष आरम्भ किया जायेगा। ताजेवाला से यमुनानगर तक, पश्चिमी यमुना नहर मुख्य लाइन की क्षमता बढ़ाने तथा इसके सुधार संबंधी अनुसधान का कार्य भी इस वर्ष आरम्भ कर दिया जायेगा। इसी प्रकार 1973–74 के दौरान एन.बी.के. लिंक के अंतिम छोर से गगसीना तक, जो कि आवर्धन नहर का दहाना है, एक पक्के जल मार्ग के निर्माण के लिए अनुसंधान आरम्भ करने का प्रस्ताव भी है। इसका उपयोग हरियाणा के हिस्से में आने वाले रावी ब्यास के जल को राज्य में लाने के लिये किया जायेगा। हमें आशा है कि भारत सरकार शीघ्र ही रावी ब्यास में पानी के हमारे हिस्से का निर्णय कर देगी। हमें यह भी उम्मीद है कि पंजाब सरकार, जिसका हम कुछ समय पूर्व एक हिस्सा थे, सतलुज यमुना लिंक के निर्माण को सुविधाजनक बनाने में उदारता दिखायेगी। वर्तमान चालू नहर प्रणाली का कार्य संतोषजनक ढंग से चलता रहा है। अवशोषण हानियों को दूर करने के लिये सरकार का रेतीले मार्गो से बहने वाले विभिन्न सुओं को पक्का करने का भी प्रस्ताव हैं। सरकार द्वारा किये गये प्रयत्नों के ये अच्छे परिणाम निकले हैं कि वर्ष 1967–68 में जहां सिंचाई के अधीन क्षेत्र 1359271 हैक्टेयर था, वह वर्ष 1972–73 में बढ़कर 1558940 हैक्टेयर हो गया है तथा इस प्रकार 199669 हैक्टेयर की वृद्धि हुई है।

हरियाणा लघु सिंचाई (नलकूपों) निगम ने भी राज्य में सिचित क्षेत्र की वृद्धि करने के लिये पर्याप्त प्रयास किया हैं। निगम द्वारा की गई गवेषणाओं के परिणामों के आधार पर मार्च, 1973 तक 900 गहरे नलकूप खोदने का जोरदार कार्यक्रम अक्टूबर? 1971 में प्रारम्भ किया गया, जो कि अब पूरा होने वाला हैं। मई, 1968 में 460 क्यूसेक क्षमता वाले 280 आवर्धन नलकूप थे, जबकि मार्च, 1973 के अन्त तक लगभग 2000 क्यूसेक क्षमता वाले 850 नलकूपों कार्य कर रहें होंगे। मई 1968 में 800 क्यूसेक क्षमता वाल 630 सीधी नलकूपों की त ुलना में 31 मार्च, 1973 तक 1300 क्यूसके क्षमता वाले 950 सीधें सिंचाई नलकूप चालू होंगे। अन्य विशेष बात यह हैं कि राज्य की शुष्क तथा खारे पानी वाले अंचलो को पानी की सप्लाई करने के लिये, नहरों में पानी बढ़ाने हेतु प्रचुर मात्रा में मीठे पानी वाले क्षेत्रों में 1000 फुट गहरे अधिक क्षमता वाले नलकून लगाकर तल तथा भूगत जल–प्रवाह का उपयोग एक साथ किया जाना हैं। प्रसन्नता की बात हैं कि बिहार में मई, 1973 तक 200 गहरे नलकूप खोदने का कार्य आरम्भ किया हैं। सौ से अधिक नलकूप पहले ही लगाये जा चुके हैं, और निगम को आशा हैं कि लक्ष्य, नियत तिथि तक पूरा हो जायेगा। निगम का यह कार्यक्रम हैं कि वर्ष 1973–74 में हिसार , भिवानी, महेन्द्रगढ़ तथा गुडगांव जिलों के शुष्क क्षेत्रों में, जहां गवेषणात्मक कार्य किया जा चुका हैं और जहां गहरे जल–भूत में मीठे पानी का पता लग चुका हैं, 500 गहरे अवर्धन सीधी सिंचाई नलकूप लगाये जायें, जिनमें प्रत्येक की क्यूसेक क्षमता 1.5 होगी।

मौनसून के विफल होने, गोबिन्द सागर झील में जल–बहाव के कम होने और राजस्थान अणु बिजली संयंत्र तथा बदरपुर थर्मल स्टेशन के चालू होने मै देर होने के कारण राज्य में बिजली की सप्लाई की स्थिति काफी गंभीर हैं। हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड यह सुनिश्चित करने के लिये निरन्तर प्रयास करता हैं, कि औद्योगिक तथा कृषि क्षेत्रों में बिजली की सप्लाई में विस्थापन कम से कम हो। इस वर्ष मार्च में बिजली में भारी कमी होने की सम्भावना हैं, जो नंगल खाद फैक्टरी को बिजली की सप्लाई बन्द करने के पश्चात कुछ सीमा तक दूर हो जायेगी। राज्य में बिजली उत्पादन में वृद्धि करने तथा भविष्य में ऐसी कमियों को दूर करने की आवश्यकता का अनुभव करते हूए, सरकार ने राज्य में बिजली के उत्पादन को परम अग्रता दी हैं। फरीदाबाद में 60 मैगावाट क्षमता वाले दो यूनिट स्थापित किए जा रहे है, और प्रथम यूनिट सम्भवतः अप्रैल, 1974 तक तथा दूसरा मार्च, 1975 तक चालू हो जाएगा। पानीपत थर्मल प्लांट स्थापित करने सम्बन्धी कार्य आरम्भ कर दिया गया हैं। इसमें आगामी 3–4 वर्षो में 220 मैगावाट बिजली का उत्पादन होगा। इसी प्रकार पश्चिमी यमुना हाईडल स्कीम भी तैयार की गई हैं, जिस पर 12 करोड़ 92 लाख रूपए का खर्च होगा। ताजेवाला हैडवर्क्स के निकट से 12 मील लम्बा एक नया जल मार्ग बनाने का प्रस्ताव हैं। इस जल–मार्ग पर 3 बिजली घर होंगे, जिनकी कुल बिजली का उत्पादन क्षमता 45 मैगावाट की होगी। हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड ने 1973–74 के लिए 45 करोड़ 31 लाख रूपए की योजना

तैयार की हैं, जिसमें केवल बिजली उत्पादन की स्कीमों के लिए ही 31 करोड़ 34 लाख रूपये की निर्धारित किए गए हैं। बदरपुर थर्मल बिजली परियोजना तथा राजस्थान अणु बिजली संयंत्र से बिजली उपलब्ध होने, ब्यास सतलुज लिंक के मुकम्मल होने और भाखड़ा बिजली के सुनिश्ति हो जाने पर राज्य में बिजली की स्थिति और सुधर जायेगी। तथापि यह उल्लेखनीय हैं कि बिजली की कटौती के बावजूी चालू वर्ष के प्रथम 9 महीनों के दौरान राज्य में कुल 95 करोड़ 45 लाख यूनिट बिजली बेची गई, जबकि गत वर्ष इसी अवधि में यह संख्या 76 करोंड़ 47 लाख यूनिट थी। हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड ने आवर्धन नहर संख्या 76 करोड़ 47 लाख यूनिट की थी। हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड ने आवध्रन नहर परियोजना के अन्तर्गत स्थापित नलकूपों, इंदिरा गांधी तथा जुई आदि की उठान सिंचाई स्कीमो के लिये अलग लाइनों की भी व्यवस्था की हैं।

यह बात बड़े गौरव की बात हैं कि हरियाणा देश का पहला राज्य हैं, जिस ने आपाती कृषि उत्पादन कार्यक्रम के अर्न्तगत भारत सरकार द्वारा दिये गये चार करोड़ रूपये की सहायता से 10000 नलकूपों को बिजली दी हैं।.....तालियां ... भारत सरकार द्वारा दी गई दो करोड़ रूपये की ऋण सहायता से अन्य 5000 नलकूपों को बिजली देने के लिये उपाय किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, बोर्ड ने अपनी साधनों से 4000 नलकूपों को बिजली दी हैं, और संभवना हैं कि 31 मार्च, 1973 से पूर्व अन्य

3500 नलकूपों को बिजली दे दी जायेगी। वितरण प्रणाली की आवश्यकतानुसार सुदृढ़ एवं आवर्धित किया गया हैं और इस दिशा में किये गये प्रयत्नों के परिणामस्वरूप पिछले वर्ष की 27 प्रतिशत की तुलना में, इस वर्ष केवल 18 प्रतिशत लाइन–हानियां हुई हैं। इस वर्ष के दौरान बोर्ड ने 14000 नलकूपों का कनैक्शन देने के अतिरिक्त, 300,000 सामन्य और 1, 500 औद्योगिक कनैक्शन दिये हैं। बारह नये ग्रिड–स्टेशनों का निर्माण किया गया हैं, जबकि वितरण ट्रांसफार्मरों की संख्या 15000 और पारेषण लाइनों की संख्या 5500 किलोमीटर अधिक हो गई हैं।

औद्योगिक विकास के क्षेत्र मैं राज्य बहुत तेजी से प्रगति करता रहा हैं। भारत सरकार ने हरियाणा में ट्रेक्टर, मोटरकार, स्कूटर, नाइलोन तन्तु सूत्र , वनस्पति घी, इलेक्ट्रौनिक संघटक आदि के उत्पादन के लिए लाइसेंस और आशय–पत्र दिए हैं। केवल 1–4–72 से 31–4–72 के दौरान भारत सरकार ने हरियाणा में मध्यम और छोटे पैमाने के उद्योगों के लिए 75 आशय पत्र और 37 लाइसेंस दिये हैं। यह प्रभावशाली विकास, राज्य सरकार द्वारा दिये गये तकनीकों परामर्श, औद्योगिक प्लाटों, निर्मित शैडों, वित्तीय सहायता और मार्कीटिंग सुविधाओं आदि के रूप में दी गई गई अन्य सहायता का सुपरिणाम ही हैं हरियाणा राज्य औद्योगिक विकास निगम, सरकारी क्षेत्र में बहुत सी परियोजनायें स्थापित कर रहा हैं। नारनौल में संगमरमर के प्रसाधन के लिये एक यूनिट चालू किया गया हैं, और

बूरिया/यमुनानगर में अर्धमशीनीकृत दियासलाई की डिब्बियां बनाने की परियोजना तथा मूरथल में 50,000 हैक्टोलिटर क्षमता वाली एक ब्रूअरी स्थापित की जा रही हैं। मूरथल में शीशे की बोतलें बनाने तथा जींद में मशीनीकृत टैनरी स्थापित करने की दो अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। हरियाणा वित्त निगम औद्योगिक यूनिटों को आर्कषक शर्तों पर मध्यम तथा दीर्घावधि कर्ज देता हैं, और इसने 1972–73 के प्रथम नौ मासों में 341 लाख 94 हजार रूपये के कर्जे स्वीकृत किये है। सरकार ग्राम्य उद्योगीकरण कार्यक्रम की ओर विशेष ध्यान दे रही हैं। इस प्रयोजन से हिसार और अम्बाला जिलों में दो औद्योगिक परियोजनायें आरम्भ की गई हैं तथा इस कार्यक्रम के अर्न्तगत महेन्द्रगढ़ जिले को भी शीघ्र ही ले लिया जायेगा।

विभिन्न श्रम सम्बन्धी कानूनों को सक्रिय रूप से लागू करने के कारण राज्य में औद्योगिक शांति एवं एकता कायम रही हैं। वर्ष के दौरान पंजीकृत फैक्टरियों की संख्या 1585 से बढ़कर 1726 हो गई हैं। राज्य में श्रमिकों को अधिक अच्छी उजरते तथा सुविधायें प्राप्त हो रही हैं, तथा प्रबन्धकों और कामगारों के मध्य झगड़ो के अवसरों को कम करने के लिये अनेक उपाय किये गये हैं। कर्मचारी राज्य बीमा स्कीम के अन्तर्गत कर्मचारियों की चिकित्सा सुविधा में और भी सुधार किया गया हैं। प्रत्येक कामगार पर खर्च की अधिकतम सीमा 54 रूपये से बढ़ाकर 60 रूपये प्रति वर्ष कर दी गई हैं और जहां कामगारों के परिवारो को हस्पताल

में भर्ती की सुविधा भी प्राप्त हैं, वहां पर यह सीमा 64 रूपये से बढ़कर 70 रूपये प्रति कामगार प्रतिवर्ष कर दी गई हैं। अधिक अच्छी चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करने के लिए ''पैनल प्रणाली'' को पूर्णतया समाप्त कर दिया गया हैं, तथा समुचे राज्य में ''सेवा प्रणाली'' डिस्पैंसरिया कार्य कर रही हैं। यमुनानगर, हिसार, बहदूरगढ़ तथा फरीदाबाद में दस नई कर्मचारी राज्य बीमा डिस्पैंसरिया खोली गई हैं, और आगामी वित्त वर्ष के दौरान सोनीपत, भिवानी और हिसार की कर्मचारी राज्य बीमा डिस्पैंसरियों में, 25 शया वाले वार्डो के निर्माण का प्रस्ताव हैं।

सड़को के निर्माण में उल्लेखनीय प्रगति हुई हैं। चालू वित्त वर्ष के दौरान लगभग 1000 किलोमीटर लम्बी सड़को का निर्माण किया गया हैं। इसमें सड़को की कुल लम्बाई 13200 किलोमीटर हो गई हैं। इनमें लगभग 8000 किलोमीटर लम्बी सड़को का निर्माण हरियाणा बनने के बाद हुआ हैं। किन्तु इस क्षेत्र में अधिकतम विकास वर्ष 1968 के बाद हुआ हैं। अब राज्य में लगभग 60 प्रतिशत गांवों में पक्की सड़कों से जोड़ दिया गया हैं। जहां मई, 1968 में 1500 गांव पक्की सड़कों से जुडे हुये थे, आज 6669 गांवों में से 3890 गांव पक्की सड़को से मिला दिये गये हैं। चालू वर्ष में नई सड़को का निर्माण के साथ–साथ वर्तमान सड़कों पर तारकोल बिछाने के कार्य की और विशेष ध्यान दिया गया हैं। आशा हैं कि इस वष के अन्त तक हरियाणा में लगभग 5000 किलोमीटर लम्बी सड़कों पर नये सिरे से तारकोल बिछा दिया

जायेगा। 700 किलोमीटर सड़को की चौड़ा करके , उन्हें दोहरे पथ वाली बना दिया गया हैं, और राष्ट्रीय राजमगो के सभी इकहरे पथ वाले मार्गो को चौड़ा करके उन्हें दोहरे पथ वालो बना दिया गया हैं। अन्तर्राज्य सड़क स्कीम के अर्न्तगत फरीदाबाद और पलबल के मध्य यमुना नदी पर एक उच्च–स्तरीय पुल बनाने के कार्य को प्रारम्भ करने का प्रस्ताव हैं। जिला अम्बाला में, अम्बाला के निकट तांगड़ी नदी पर एक उच्च स्तरीय पुल का निर्माण लगभग पूरा होने वाला हैं, तथा यमुना नगर और पौंटा के मध्य नालों पर तीन नये पुलों का निर्माणधीन हैं। हिसार नगर में से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्गो पर रेलवे उपरि–पुल का निर्माण कार्य पूरा हो चु का हैं, और उसे यतायात के लिये खोल दिया गया हैं।

विभिन्न विकासात्मक स्कीमों ने राज्य में रोजगार के व्यापक अवसर प्रदान किये हैं। जबकि मार्च, 1971 के अन्त में संगठित क्षेत्र में रोजगार की अखिल भारतीय वृद्धि 8.1 प्रतिशत थी, मार्च, 1972 को समाप्त होने वाले वर्ष मे राज्य में यह वृद्धि 8. 9 प्रतिशत हुई। राज्य में रोजगार कार्यालयों ने अपने पंजीकृत उम्मीदवारों में से 18.9 प्रतिशत को रोजगार दिलाया, जबकि अखिल भारतीय औसत केवल 8.9 प्रतिशत रही।

सरकार ने आवास के स्कीमों की और ध्यान दिया हैं, और राज्य आवास बोर्ड ने 1972–73 के दौरान फरीदाबाद में आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गो के लिये 500 मकान बनाये हैं। दो

और स्कीमें, जिनके अन्तर्गत फरीदाबाद में एक करोड़ 75 लाख रूपये की लागत से, 900 अन्य मकान बनाने का प्रस्ताव हैं, शीघ्र ही कार्यन्वित की जा रही हैं। बोर्ड ने, वर्ष 1973–74 के दौरान सभी मुख्यालयों और राज्य के अन्य औद्योगिक नगरों में 10 करोंड रूपये की लागत में लगभग 5000 मकार बनाने का प्रस्ताव रखा हैं। इन स्कीमों के लिये अधिकतर राशि आवास और नगर विकास निगम से ऋण के रूप में ली जायेगी।

कमजोर वर्गों कल्याण, विशेष रूप से बाल कल्याण तथा महिला कल्याण, की ओर निरन्तर ध्यान दिया गया हैं। समाजिक, आर्थिक और शरीरिक दृष्टि से अक्षम, वृद्वि एंव निराश्रित व्यक्तियों को राहत देने के लिये विभिन्न स्कीमें कार्यन्वित की जा रही हैं। स्वैच्छिक संगठनो को प्रोत्साहित किया गया हैं, और उन्हें उदारता से सहायता–अनुदान भी दिया गया हैं। शिशओं के कुपोषण के अभिशाप को दूर करने के लिए, 13 नगरों की गंदी बस्तियों में पोषण–कार्यक्रम जारी हैं। भिक्षिवृत्ति निषेध अधिनियम , 1971 लागू किया गया और एक प्रमाणीकृत संस्था की स्थपना की गई हैं।

अनुसूचित जातियों एंव पिछड़े वर्गों के उद्धार के कार्य परम अग्रता दी गई हैं। इन को शिक्षावृत्तियों और कृषि औजारों के लिये आर्थिक सहायता देने, तथा इनके वास्ते चौपालों धर्मशालों, मकानों और कुओं के निर्माण सम्बन्धी में बैठक के लिये हरिजना लड़कों को प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से अम्बाला, रोहतक

तथा भिवानी में 160 की कुल क्षमता वाले तीन पूर्व–परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये हैं। हरिजन कल्याण निगम विविध व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिये, अनुसूचित जातियों के सदस्यों को कर्जे देने में राज्य सरकार के प्रयत्नों में वृद्धि करता रहा हैं। निगम, करनाल में जूता उत्पादन केन्द्र भी स्थापित कर रहा हैं, तथा उसका लघु उघोंगों को स्थापित करने का विचार भी हैं जिनके द्वारा हरिजन परिवारों को रोजगार दिया जायेगा।

हालांकि, वर्ष के दौरान बाढ़ो के करण राज्य के किसी विशेष समस्या का सामना नहीं करना पड़ा, फिर भी वर्ष 1972 के दौरान वर्षा न होने के परिणामस्वरूप, महेन्द्रगढ़ तथा भिवानी के जिलों तथा रोहतक जिले की झज्जर तहसील और गुडगांव जिले की नूह एवं फिरोजपूर झिरका तहसालों में खरीफ की फसलों की हानि हुई हैं। इन क्षेत्रों में सहायता के आधार पर चारे की सप्लाई के लिये 19 लाख रूपये की राशि उत्पादन के रूप में स्वीकृत की गई, तथा चारे की खरीद के लिये तकावी कर्जो के रूप में 30 लाख रूपये की राशि की गई, तथा चारे की खरीद के लिए तकाबी कर्जो के रूप में 30 लाख रूपये की राशि वितरण के लिये स्वीकृत की गई। सूखाग्रस्त क्षेत्रों में रियायती दरों पर सप्लाई करने के लिये सरकारी एजेंसियों के द्वारा पड़ोसी राज्यों से 90000 क्विंटल चारा मंगवाया गया हैं। लण्डोहा काम्पलैक्स में किये गये बाढ़–नियन्त्रण कार्यों के परिणाम स्वरूप कोटला झील क्षेत्र में, कृषि के लिये 2500 एकड़ भूमि प्राप्त हुई हैं। यमुना नदी के

साथ–साथ बाढ़ सुरक्षा कार्य जैसे कि पर्वत–स्कंधो, तट–बन्धनों तथा पुश्तों के निर्माण–कार्य सन्तोषजनक ढंग से होते रहे। इस से बहुमुल्य कृषि–भूमि का संरक्षण हुआ हैं। जिला गुडगांव में गौंची नाले के समीपवर्ती निचले क्षेत्रों की सुरक्षा की गई हैं तथा गौंची नाले की क्षमता भी बढ़ाई जा रही हैं।

ऐसा विचार किया गया हैं कि वर्तमान भू–राजस्व तथा अन्य विविध भूमि–करों जैसे कि स्थानीय कर, अधिभार, विशेष प्रभार आदि के स्थान पर एक नया व्यापक भूमि कर लगाने की आवश्यकता हैं। वर्तमान भू राजस्व अनेक दशक पूर्व हुये बन्दोबस्त के समय निर्धारित किया गया था और भू राजस्व की दरें प्रचलित कीमतें तथा पैदावार के संदर्भ में बहुत ही कम हैं एंव व्यवहारिक भी नहीं हैं। अन्य विविध भूमि–करों की पेचीदा गणनाओं, निर्धारण आदि के कारण कार्य में वृद्धि हो गई हैं, और किसान भी उन करों की विविधता के कारण परेशान होता हैं। भू–राजस्व तथा इन सभी करों के स्थान पर, कीमतों, भू–उत्पादतकता तथा सिंचाई सुविधाओं सम्बन्धी समकालीन परिस्थियों पर आधारित एक नया व्यापक भूमि कर लगाने से भू–राजस्व का कानून केवल युक्तियुक्त, सरल तथा समन्वयकारी बन जायेगा, अपितु इससे राज्य की विकास सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए अतिरिक्त राजस्त भी प्राप्त होगा।

सरकार सदैव हरियाणा को एक गतिशाली, आधुनिक तथा विकासोन्मुख राज्य कर रूप देने के लिये उत्सुक रही हैं। इस

उद्देश्य की प्राप्ति विभिन्न विकास कार्यों की जोरदार कार्यन्विति द्वारा ही नहीं, अपितु पर्यटन, सिविल विमानन तथा लोक सम्पर्क के माध्यम से भी की जा रही हैं। पर्यटन के क्षेत्र में हरियाणा ने एकाएक समस्त देश का ध्यान आर्कषित किया हैं। सभी मुख्य राजमार्गो पर पर्यटक बंगले, मोटल और रेस्तरां बनाये गये हैं। पिंजौर, बड़खल झील, सूरज कुण्ड, सोहना तथा कालेसर के पर्यटन–स्थलों का भी पूर्ण लाभ उठाया जा रहा हैं। जिला गुडगांव में सुलतानपुर झील पर बना पक्षी शरण–स्थल विदेशियों के लिये बहुत ही लोकप्रिय हो गया हैं। सिविल विमानन के क्षेत्र में, हरियाणा को देश में प्रमुख स्थान प्राप्त हैं। राज्य में करनाल और हिसार के दो विमानन क्लबों में 5000 घंटों से अधिक उड़ान की जा चुकी हैं। प्रशिक्षणर्थियों को वाणिज्यिक विमान–चालक लाइसेंस, ग्लाइडर चालक लाइसेंस, सहायक विमान–चालक प्रशिक्षक प्रमाणन और विमान–चालक प्रशिक्षक प्रमाणन तथा उपकरण की प्रमाणन की प्राप्ति के लिये सुविधायें भी उपलब्ध हैं। महिला प्रशिक्षणाथिर्यो में, जिनमें से आठ ने पहले ही एकाकी उड़ान कर ली, उड़ान प्रशिक्षण की लोकप्रियता, एक महत्वपूर्ण प्रगति हैं। यह बड़ी संतोषजनक बात हैं, कि हरियाणा विमानन क्लबों में प्रशिक्षित नौ वाणिज्यिक विमान चालक तथा और तीन विमान इंजिनियर इंडियन एयरलाइन्स द्वारा चुनें लिये गये हैं। हिसार और करनाल में पक्के धावन–पथ बनाये गये हैं। सिविल विमानन विभाग, फसलों पर विमानों द्वारा दवाइयां छिड़कने का कार्य शीघ्र ही आरम्भ करने का विचार कर रहा हैं। इस वर्ष की

की एक महत्वपूर्ण घटना एशिया 72 प्रदर्शनी में हरियाणा को भाग लेना हैं। हरियाणा मंडप, डिजाइन तथा परिकल्पना की दृष्टि से अद्वितीय था, तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के मुख्य आर्कषणों में से एक रहा। प्रख्यात फिल्म–निर्माताओं ने व्यापार मेले के लिए अनेक वृत्त चलचित्र बनाये थे, जो हरियाणा की विभिन्न क्षेत्रों की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते थे।

खेलों के क्षेत्रों में हरियाणा की संभावनाएं बड़ी उज्जवल हैं। इस समय हरियाणा के पहलवान समस्त देश में प्रसिद्ध हैं। यह प्रस्ताव किया गया हैं कि बहुत छोटी आयु से खेलों के विभिन्न क्षेत्रों में लड़कों को प्रशिक्षण देने के लिए राई में एक स्पोर्टस स्कूल की स्थपना की जाये। आशा की जाती हैं कि इस इस परियोजना द्वारा कुछ वर्षो में ही हरियाणा, देश के खेलों के मानचित्र पर उभर आयेगा।

सरकार इस बात के लिए उत्सुक हैं कि शहरी विकास योजनाबद्ध तथा क्रमबद्ध होना चाहिये। राज्य के प्रत्येक नगर के लिये, महा–योजनायें तथा सौंदर्यवर्धन स्कीमें बनाई जा रही हैं तथा शीघ्र ही उनके पूरे किये जाने की संभवना हैं। बेहतर नागरिक सुविधायें प्रदान करने, गंदी बस्तियों को दूर करने, समान्य स्वच्छता तथा सौंदर्यवर्धन को सुनिश्चित करने की दृष्टि से स्थानीय प्रशासनों को भी गतिशील बनाया जा रहा है।

कार्यकुशलता, तालमेल तथा शीघ्र निष्पादन को सुनिश्ति करने की दृष्टि से सरकार प्रशासन को दोषमुक्त करने के लिये उत्सुक हैं। जिले तथा एक और आयुक्त मंडल बनाया गया हैं, ताकि अधिक सघन विकास संभव हो। हिसार तथा गुडगांव में प्रशासन तथा न्यायिक काम्पलैक्स में कार्य जारी हैं तथा आशा हैं कि ये दोनों परियोजनाओं जल्दी ही पूर्ण हो जायेंगी। यथा समय , यह कार्य अन्य जिला मुख्यालयों पर भी आरम्भ किया जायेगा।

कानून तथा व्यवस्था नियन्त्रणधीन रही। इस वर्ष एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति देखने में आई हैं वह हैं शिक्षकों के एक भाग की और से अनुशासन हीनता तथा उत्तेजना का फैलाया जाना। गैर सरकारी कालेजों के शिक्षको ने एक आन्दोलन चलाया था, किन्तु बेहतर परामर्श के प्रभाव से उन्होनें यह आन्दोलन वापिस ले लिया। सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के एक भाग ने '' काम न करो हड़ताल'' करने का प्रयत्न किया हैं, लेकिन कुछ स्थानों को छोड़कर हड़ताल करने वालों की संख्या बहुत कम ही रही हैं। इस स्थिति से सख्ती के साथ निपटा गया तथा सभी उपद्रवकारियों को या तो हिरासत में ले लिया गया, या उन्हें नौकरी से हटा दिया गया। हर्ष का विषय हैं कि विद्यार्थियों ने उत्तरदायित्व की भावना दिखलाई हैं। सामान्य तथा उन्होंनें कानून व्यवस्था को अपने हाथों में नहीं लिया, और वे अस्वस्थ प्रभावों तथा दबावों के वश में नही आयें। मानव अपराधों की स्थिति में सामान्यतः सुधार हुआ हैं। डकैती के दो प्रमुख दलों को गिरफ्तार कर लिया गया हैं,

जिसमें जींद तथा रोहतक में की गई दो गंभीर डकैंतियों, तथा रोहतक और गुडगांवों के जिलो में की गई कई ट्रकों की बटमारियों का पता चलता हैं। पुलिस प्रशासन को अधुनिक तथा दोषरहित बनाने के लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं। सभी महत्तवपूर्ण पुंलिस स्टेशनों तथा जिला मुख्यालयों में पहले से लगाये गये रेडियो–प्रचार सैंटो के अतिरिक्त, अम्बाला, करनाल तथा गुडगांव के जिला मुख्यालयों को टेलीप्रिंटर सेवा द्वारा राज्य पुलिस मुख्यालय से जोड़ दिया गया हैं, तथा शेष जिलों को टेलीप्रिटरों सेवा द्वारा राज्य पुलिस मुख्यालय से जोडद्य दिया गया हैं, तथा शेष जिलों को भी शीर्घ जोड़े जाने की संभवना हैं। राज्य के सभी जिलों को रेडियो टेलीफोन द्वारा राज्य मुख्यालय से जोड़ दिया गया हैं, तथा प्रवर पुलिस अधिकारियों को वाहनो में बेतार सैट लगे दिये है। अपराधों की रोकथाम के लिये चल यातायात अमला, राज्य में जरनैली सड़क तथा अन्य राजमार्गो पर रात को गश्त करता हैं। करनाल के पास मधुबन में हरियाणा सशस्त्र पुलिस लाइन को एक प्रमुख काम्पलैक्स के रूप में विकसित करने कार्य को कार्य की प्रगति जारी रही।

देश भर में वर्ष 1972–73 राष्ट्रीयता स्वतन्त्रता के 25 वें जयन्ती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा हैं। हरियाणा भी इन समारोहों में पूरे उत्साह से भाग ले रहा हैं। भारत सरकार के सुझाव के अनुसार विभिन्न विभागों के रूप में चुना गया हैं तथा भारत सरकार से कुछ वित्तीय सहायता प्राप्त करके इन सभी गांवों

को विकसित तथा विविध क्षेत्रों में बेहतर बनाया जायेगा। रोहतक में स्वतन्त्रता–सेनानियों तथा शहीदों की स्मृति में एक प्रभावशाली स्मारक बनाया जायेगा, जिसके लिए भूमि अर्जित की जा रही हैं। स्वतन्त्रा सेनानियो का सम्मान करने के लिए और भी कई प्रकार की योजनाओ क्रियान्वित की जा रही हैं।

हरियाणा राज्य एक ऐसी आधारभूत एक ऐसी आधारभूत रूप रेखा बनाने में सफल हो गया हैं, जिसमें यह प्रदेश भविष्य में बहुत तेजी से प्रगति कर सकेगा। सड़को के निर्माण, बिजली तथा सिचाई सुविधाओं की व्यवस्था, वैज्ञानिकों तौर पर कृषि के विकास तथा उद्योगों की वृद्धि से यह प्रदेश और अधिक समृद्धि होगा। 5.5 प्रतिशत औसत अखिल भारतीय वृद्धि दर की तुलना में हरियाणा की वृद्धि दर 12.7 प्रतिशत हैं जो देश में सबसे अधिक हैं। प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से भी, हरियाणा देश भर में दूसरे स्थान पर हैं। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं हैं कि निरन्तर प्रयास के द्वारा हरियाणा शीघ्र ही देश में, सर्वाधिक समृद्धि राज्य बन जायेगा।

अब आप आगामी वर्ष के बजट–प्रस्तावों तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवस्त हो जायेंगे। मुझे आशा हैं कि आप द्वारा किया गया विचार–विमर्श राज्य के लिये अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा।

अध्यक्ष द्वारा घोषणा

चौधरी दल सिंह की रिहाई के सम्बन्ध में

श्री अध्यक्षः पंजाब विधान सभा की प्रकिया तथा कार्य–संचालन सम्बन्धी नियमों के नियम 288 के अधीन मैंने सदन को यह सूचना देनी हैं कि प्राप्त हुई सूचना के अनुसार चौधरी दल सिंह, एम0 एल0 ए0 को उन द्वारास दायर किये गये पुनरीक्षण पर ऐडीशनल सैशन जज, जींद ने 2 मार्च, 1973 को रिहा कर दिया, तथा उक्त न्यायालय ने उच्च न्यायालय से सिफारिश की कि एस0 डी0 एम0 जींद के 28 फरवरी, 1973 के आदेश रद्द किये जायेंगे।''

सभापतियों की तालिका

श्री अध्यक्षः पंजाब विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य–संचालन सम्बन्धी नियमों के नियम 13 (1) के अधीन मैं निम्नलिखित सदस्यों को सभापति–तालिका (पैनल आफ चेयरमैंन) में कार्य करने के लिये नाम निर्देशित करता हूं:–

1. चौधरी सरूप सिंह
2. चौधरी मनफूल सिंह

3. चौधरी ईश्वर सिंह

4. चौधरी फूल सिंह (रोहट)

.

याचिका–समिति

श्री अध्यक्षः पंजाब विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य–संचालन सम्बन्धी नियमों के नियम 293 (1) के अधीन मैं निम्नलिखित सदस्यों को याचिका–सीमित (कमेंटी आन पैटीशन्ज) में कार्य करने के लिये नाम निर्देशित करता हूं–

1. श्रीमति लेखवती जैन (उपाध्यक्षा) पदेन सभापति

2. राव दलीप सिंह

3. श्री गुलाब सिंह जैन

4. चौधरी मनफुल सिंह

5. चौधरी फूल चन्द (मुलाना)

सचिव द्वारा घोषणा

Secretary: I beg to say on the Table of the House a satement showing the Bills which were passed by the Haryana

Legislative Assembly during its last (August-Octber, 1972) Session and which have since been assented to by the *President/Governor.

Satement

1. The Punjab Separation of Judcial and Executive functions (Haryana Amendment) Bill, 1972.

2. The Haryana Public Premise and Land (Eviction and Rent Recovery) Bill, 1972.

3. The Haryana Ceiling on Land Holding Bill, 1972.

4. The Punjab Co-operative Societies (Haryana Amendment) Bill, 1972.

5. The pujab Agricultural Produce Markets (Haryana Second Amendment) Bill, 1972.

6. The Punjab Khadi & Village Industries Board (Haryana Amendment) Bill, 1972.

7. The Pujab Anatony (Haryana Amendment) Bill, 1974.

8. The Punjab Genral Sales Tax (Haryana Amendment and validation) Bill, 1972.

शोक प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): अध्यक्ष महोदय, हमारी विधान सभा के पिछले सैशन के बाद और इस सैशन के बाद बड़े साथी हमारे से बिछुड़ गये। मैं सदन से आपके जरिये प्रार्थना करूंगा कि उनके परिवारों के प्रति सदन, शोक प्रस्ताव पास करें और उनके परिवारों को कन्डोलैन्स मैसेज दे।

यह सदन भारत के भूतपूर्व महा राज्यपाल, श्री चक्रवर्तीगोपालचार्य के 25 दिसम्बर, 1972 को हुये दुःखद निधन पर गहन शोक प्रकट करता हैं। श्री सी0 राजगोपालचार्य का जन्म 8 दिसम्बर, 1878 को हुआ। उन्होंनैं एल0 एल0 बीण को डिग्री ला कालेज, मद्रास से ग्रहण करने के बाद वकालत शुरू की और 1919–20 में उन्होंनें सत्याग्रह मूवमैंट में शिराकत की व 1948 में भारत के प्रथम गवर्नर बने तथा जनवरी, 1950 तक वे इस पद पर रहे। 1946–47 में इससे पहले कि मैंबर, गवर्नर कौसिल रहे और उसके पश्चात् 1952 से 1954 तक वे मद्रास के मुख्य मन्त्री रहे।

डाक्टर शौकत–उल्लाह शाह अनसारी का जन्म 12 मई, 1908 को मिर्जापुर में हुआ। उन्होंनें अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अलीगढ़ में प्राप्त की और बी0 एस0 सी0 तथा एम0 डी0 को डिग्री पैरिस में प्राप्त की। 1951 में आप आन्ध्र प्रदेश से लोक सभा के लिये चूने गये। वर्ष 1960 में आपको सूडान में राजदूत नियुक्त किया गया और इस पद पर आप छः वर्ष तक रहे। आप 1968 से

1971 में वे केरल तक उड़ीसा के राज्यपाल रहे। इनका निधन 26 दिसम्बर, 1972 को हुआ।

श्री रमन शंकर, भूतपूर्व मुख्य मंत्री केरल का जन्म 30 अप्रैल, 1909 को कुटारकारा गांव केरल में हुआ। वर्ष 1928 में उन्होंनें त्रिवेन्द्रम में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। वे 1948 में ट्रावनकोर असैम्बली के लिये चुने गये तथा 1949 में कांस्टीच्युएन्ट असैम्बली के मैंबर बने। 1962 में वे केरल राज्य के मुख्यमंत्री बने। 7 नवम्बर, 1972 को उनका निधन हुआ।

मेजर जनरल हिम्मत सिंह, भूतपूर्व संसद सदस्य एवं भूतपूर्व एवं भूतपूर्व उप–राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश का जन्म 12 अगस्त, 1897 को हुआ। 1917 में उन्हें इंडियन आर्मी में कमीशन मिला। भारतीय सशस्त्र सेना का प्रतिनिधित्व करते, वे केन्द्रीय विधान सभा में 1946 से 1947 तक, संविधान सभा में 1947 से 1948 तक तथा अस्थायी संसद मे 1950 से 1952 तक सदस्य रहे; 1955 तक वे हिमाचल प्रदेश के उप–राज्यपाल रहे। इनका निधन 9 जनवरी, 1973 को हुआ।

चौधरी ए0 मुहम्मद, सदस्य राज्य सभा का जन्म 1922 में बिहसा के जिला आरा में हुआ। उन्होंनें अरहाड़ एवं पटना में शिक्षा प्राप्त की। वे सब से पहले सितम्बर 1961 में राज्य सभा के मैम्बर चुने गये। 1964 व 1970 में वे पुनः मेम्बर चुने गये और 7 फरवरी, 1973 को हुआ।

कर्नल वेद रतन मोहन, सदस्य, राज्य सभा, का जन्म 1925 में रावलपिंडी में हुआ। 1961 से 1964 तक वे लखनऊ कारपोरेशन के उप–महापौर रहे और 1964 से 1965 तक महापौर रहे। 1966 में उन्हें टैरीटोरियल आर्मी में आनरेरी कर्नल की उपाधि से विभूषित किया गया। 1972 में वे राज्य सभा के लिए चुने गये और 28 जनवरी, 1973 को उनका निधन हुआ।

श्री एस0 आर0 वसावड़ा, सदस्य राज्य सभा, का जन्म 16 फरवरी, 1903 को हुआ। वे नैशनल पार्टी के फाउन्डर सचिव थे। वे 40 वर्ष तक श्रमिक अभियान से सम्बन्ध रहे। वे नैशनल लेबर कमिश्न, रेलवे दुर्घटना जांच कमेटी तथा उद्योगों की केन्द्रीय परामर्शदात्री परिषद के सदस्य थे। 1968 में उन्हें पदम–भूषण से अलकृत किया गया। इनका निधन 20 नवम्बर, 1972 को हुआ।

श्री शिव चण्डिका प्रसाद, संसद सदस्य, का जन्म 1912 में बिहार राज्य में हुआ। 1939 से 1945 तक स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान उन्होंनें कई बार जेल यत्रायें की। 1967 में वे पहली बार बांका निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के लिये चुने गये। इनका निधन 15 अक्टूबर, 1972 को हुआ।

श्री एम0 राजनगम, संसद सदस्य, मद्रास स्टेट के रहने वाले थे। मद्रास विश्विद्यालय से उन्होनें अपनी शिक्षा प्राप्त की । 1962 से 1971 तक वे तमिलनाडु विधानसभा के सदस्य रहे। वे एक अच्छे राईटर थे। इनका निधन 22 अक्टूबर, 1972 को हुआ।

सन्त फतेह सिंह, भूतपूर्व अध्यक्ष, अकाली दल का जन्म, पंजाब के जिला भठिन्डा में 27 अक्टूबर, 1911 को हुआ और उन्होंनें अपनी सारी उम्र गुरूद्वारों और दूसरे धार्मिक कामों मे लगाई। वे कई साल तक अकाली पार्टी के प्रधान रहे। वे हिन्दू–सिख यूनिटी के वकील थे। इनका निधन 30 अक्टूबर, 1972 को हुआ।

सन्त चनन सिंह, अध्यक्ष शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी का जन्म 1909 को नैनीताल में हुआ। पांच साल तक वे सेना में काम करते रहे। वर्ष 1933 में सेना से निवृत होने के बाद आपने अपना जीवन गुरूद्वारों की सेवा में तथा कई स्कूलों और सड़कों के निर्माण में लगा दिया। 1962 में आप शिरोमणी प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष चुने गये तथा देहावसान तक वे इस पद पर आसीन रहे। 29 नवम्बर, 1972 को इनका निधन हुआ।

श्री पीताम्बर पन्त, भूतर्पूव सदस्य, योजना आयोग का जन्म 26 दिसम्बर, 1919 को नैनीताल में हुआ। 1939 में इलाहाबाद यूनीवर्सिटी से इन्होंनें बी0 ए0 की डिग्री प्राप्त की। उन्होंनें स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़–चढ़ कर भाग लिया तथा 1942 से 1945 के बीच वे कई बार जेल गये। आप 1967 में योजना आयोग के सदस्य नियुक्त हुये। श्री पन्त कई पुस्तकों एंव पत्रो के लेखक थे। राष्ट्र के प्रति अमूल्य सेंवाओं के लिये आपको पद्यम भूषण से अलंकृत किया गया। इनका निधन 26 फरवरी ,1973 को हुआ।

स्पीकर साहब, आप के जरिये, मैं सदन से प्रार्थना करूंगा कि हमदर्दी का प्रस्ताव, इन सब महानुभावों के परिवारों को भेजा जाये।

चौधरी फूल सिंह (रोहट अनुसूचित जनजाति): स्पीकर महोदय, पिछली बार जब हम यहां हाउस में मिले; स्पीकर साहिब, may I speak in English?

श्री अध्यक्ष: जैसी आपकी इच्छा।

Ch. Phool Chand: Sir, really this is my sad duty to play tributes to these great lumintaries of our conutry who have left us when we needed them most. I realy feel myself concerned that last time when we met on the floor of this House there was also this item 'Obituary Reference' and the list probably contained five of six persons. But this time, the list of persons, who have left us, is of as many as 12 persons. They were men of great experience and had done a lot in the field of politics as well as in social field. The nature has snached away these persons form us. It is indeed a very sad occasion. I may state that I have had no experience of meeting any one of these great men. But I can say something only for two of them i.e. Rajo ji and Sant Fateh Singh. For Raji ji, speaking and paying homage by a man of my status whould be too much. I cannot justify this occasion because he was a man of great status. His status was sky-high. He rose to the pinnacles of glory and all his admiresrs abroad and in the country thought very high of him and his knowledge. He has left an indelibel impressioon on the minds of those persons and leaders who happended to work with him. I remeber, our

leaders, like Mahtma Gandhi, Pandit Jawahar Lal Nehru and other held him in very highe esteem. And sir, it appears very strange that though most of the time he fought with them. He did not reconcile with them; he did not think at one with them and remained devergent. He was always differing with them. But, still be was held in high esteem by them. He had a qualitative distinction. He was a man who laboured on himself and fought for truthfulness. I would say that all great men of the country were enamoured of him. This is because his advice and suggestions were objective and also detached. He never minced matters. He was so clear in his mind that he never said anything with prejudice. So, I would say that he was a man who must have coquered prejudice and neve said anything which was personal, what he said was always suggestive, which covered the interests of the country as whole and not oa any single individual. It is very sad that I came to know something of him after his sad demise. On his death every medium of press, whether it was a daily, a fortnightly, a monthly, periodical of a magazine, everythings was flashed with news of Raja ji. I missed an occasion which I might have availed of. At one tiem, he opted to come to our town. This was the time when he made a country wide tour for his newly formed Swatantra party.But, unfortunatelynity. I was driven somewhere out and thus couldnot avail of this opportunity. Even then I came to know that he was a man of great qualites. He was a complete institution in himself. Having all such faculties and about which every time, I spoke to my friends out of devotion, I say that he was a man who, in the age of 80 or more, launced a full fledged campaign ofr his party. He differed with is old companions. He toured the whole of the conntry and gave the people an idea which became

receptive. People accpted his idea and at one time his ideal partty, the Swatantra party, fatched as many as 50 seats in the Lok Sabha and it was called the second largest party in the country. He was a man whome everyone loved and cherished. He has really left an indelible impression on our minds. Though he has passed away, yet he has left with us our country and wil remain so for centuries long many others. They all display his qualities and virtues.They many other works. They all display his qualities and virtues. They are before us with our country and will remain so for centuries long and would serve as guidelines to us and we would be receiving imspiration from them. Alongwith that, I feel really surprised that he was not a man of masses and in spite of that he was definitely a man of not a man of masses and spite of that he was definitely a man of the intelligent and the elite. Such a great man whome we cherished and loved has left us. Our great leaders loved him. At the time he was the Governor General, I read, our great leader, Pandit Jawahar Nehru, wanted to induct him to the highest assignment of the country, the office of the President. But, anyhow, he could not carry it through at that time, while departing, Pandit Nehru was greatly moved and said so many things in appreciation of him. Even mere reading of such things gives us a feeling that such a man is missing from amidst us. It is really very painful and my heart is also heavy and depressed with the feeling that such a man, who had reached the height of glory in not amongst us. I feel for his family and others connected with him. They all must be missing him.May be missing him. May God give them relief and consolation.

The others great personality, about whom I want to say something, is Sant Fateh Singh. He was a man, who rose from almost a very small poor family. He was a man of determination and, sir, it is due to his zeal and zeast that he rose to such a high postion and occupied a unique postion in the Sikh Community. He successfully led a demonostration. He successfully led a demonstration. He, in fact, proved a very good genius for Haryana. If you do not mind my saying, I would say that it is because of his fear and threats, when he was shaking the pillar of Parliament that the Delhi leaders in the Parliament thought of Haryana. And, our people say that we could have fought but I would say that we could not have fought so well as Sant Fateh Singh did. He was great soul and a great soul and great figure in bringing Haryana to us. I would even say that gentlemen belonging to Sikh community, who might be adhering to any ideology, held him in high esteen. He was such a giant that he was the undisputed leader of every Sikh whether he may be living in Punjab or in the country elsewhere. Not only, that, sir, he extended his hold on the sikh community living in foreign countries and his emikswsarees, at his instance, collected substantial funds and ram completery a parallel Government and his orders were carried out. I feel very sad over the destiny of my Sikh brethern. Probbay such a great and bold leader may not be there again as Sant Fateh Singh. He, sri, sat in dharnas and sometimes in strikes un-to-death. He styrikes and dharans were very effctiver. They brouhgtthe inteded result and he got what he liked. If such a soul is not amonst us, amonst my Sikh brethern, I really fell very sorry. When I place my hands on my heart I feel very sorry in this hour, in the absence of these great men. May God give consolation and relief to the

families of the departed souls. Though we may not be able to fill up the gap but their works, memories, preachings and all other things, which they have left for us, will give us inspiration. We would practise, follow and adhere to them. With these words, sir, I offer my home page to these departed souls.

चौधरी शिव राम शर्मा (नीलाखेड़ी): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज एक बड़ी लम्बी सूची हमारे सामने ऐसी महान हस्तियों की आई हैं जो कि पिछले सत्र और इस सत्र के बीच की मियाद में हम से जुदा हो गई हैं। उन में सभी के बारे में तो शायद मैं इतना कुछ नहीं जानता लेकिन कुछ के बारें में जितना कुछ भी जानता हूं उस के अनुसार मैं ऐसा अनुभव करता हूं कि उन के चल जाने से देश को काफी हानि पहुंची हैं। सब से पहले मैं श्री चक्रवर्ती गोपालाचार्य जी के बारें में कुछ कहना चाहूंगा। उनके बारे में मेरे ऊपर तो सन् 1942 से ही ऐसा प्रभाव पड़ा हुआ हैं कि मैंने उस समय से यह समझ रखा था कि सारे हिन्दोस्तान में उन जितनी तेज वृद्धि रखने वाला शायद ही कोई और व्यक्ति होगा। सन् 1942 में जब हिन्दोस्तान में क्रिप्स मिशन आया और वे अंग्रेज सरकार का संदेश लेकर आये कि हम हिन्दुस्तान को दरजाये नौआबदियात देने के लिए तैयार है, परन्तु यहां पर जो कांग्रेस की तरफ से आजादी का आन्दोलन चल रहा था उन्होंनें यह प्रस्ताव का काम किया कि हमें दरजाये नौआबदियात मन्जूर नहीं हम पूरी आजादी लेंगे। उस समये राजा जी ने यह कहा था

कि हमें इस समय जो कुछ मिलता हैं वह ले लेना चाहिये और यदि हम गलती करते हैं न लेने की तो पता नहीं कुछ दिन बाद कैसी स्थिति हमारे सामने खड़ी होगी। तो आप जानते हैं कि सन् 1974 में जब भारत में बंटवारा हुआ तो दोनो तरफ पाकिस्तान में और हिन्दोस्तान में हमारे सामने दर्दनाक वाक्ये हुए कि पड़ौसी ने पड़ौसी को, जो हमेशा इकट्ठे रहते थे, कत्लेआम कर दिया और एक दूसरे को लूटा, जब यह सब बातें हो रही थी तो उस समय राजा जी के कहे हुये शब्द जो उन्होंनें पांच साल पहले कहे थे सामने गूंज रहे थे। उन्होंनें पांच साल पहले ही बताया था कि यदि हम दरजाये नौआबादियात ले लेते हैं तो बहुत जल्दी आजादी प्राप्त कर लेंगें और भंयकर स्थिति से बच जायेंगे। लेकिन उस समय चूंकि हमने उनकी बात को नहीं माना गया तो पांच साल के भीतर ही भंयकर स्थिति हमारे सामने आ आई। इस उदाहरण से पता चलता हैं कि वे कि वे कितने आगे की सोचते थे। आजादी हासिल करने के लिये तो उन्होंनें काम किया था परन्तु आजादी के बाद भी जिस प्रकार की सरकार चलती रही उनको उनको सलाह मश्वरा देकर अपने ढंग से समझा कर अच्छी बातें करवाने का यत्न किया लेकिन जब उनकी बातें न मानी गई, किन कारणों, उन में मैं नही जानता तो फिर उन्होनें अपनी एक अलग पार्टी बना ली और उसे थोड़े ही समय इतना मजबूत बना दिया कि सारे लोग दंग रह गये। उस पार्टी के अन्दर कमजोरी आई, उसके भी कुछ कारण हो सकते हैं, लेकिन राजा जी का जहां तक सम्बन्ध हैं वे ठीक और सही ढंग से सोचने वाले थे। उनकी सारी बातों से

यह सिद्ध हुआ हैं कि वे इतनी तेज बुद्धि रखते थे कि यह स्थिति चल रही हैं और इसके बाद ऐसी स्थिति हो सकती हैं। इसलिये मैं सब से पहले राजा जी को अपनी ओर से हार्दिक रूप से श्रद्धांजलि अर्पण करेंगे।

इसी सूची में संत फतेह सिंह जी का नाम भी आया हैं। उनको कई लोग यह भी कहते होंगे कि उन्होनें हिन्दू और सिखों में लड़ाई करवाई, सिखों को इकट्ठा करके उन्होंनें हिन्दूओं से जुदा होने की कोशिश की, परन्तु मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूं जो ऐसा सोचते हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं तो यह समझता हूं कि जिस समय संत जी के हाथों में ताकत आई तो उन्होंनें हिन्दू और सिख को इकट्ठा करने की कोशिश की और इकट्ठा करके चलाया। अध्यक्ष महोदय मैं तो यही कहूंगा कि संत जी ने पंजाबी सूबे का आन्दोलन जिस तरीके से चलाया था उस से हमारे हरियाणा के अन्दर जागृति के लोगों की नींद खुली। हरियाणा के लोग जो सैकड़ो सालों से पिसते चले आ रहे थे और दबे हुये थे, उन्होंनें समझा कि यदि हम आजाद नहीं होंगे, तो उत्रति नहीं हो सकती, हम वैसे भी गुलाम तो नहीं थे, लेकिन अपने रीजन मै दबें हुये महसूस करते थे क्योंकि कुछ तो हमारे पहले नेता पंजाब में देर से रहने के कारण उनके असर में रहते थे और जो पंजाबी रीजन था उनके हाथों मैं क्योंकि ताकत रहती थी उन्होंनें हमें दबा कर रखा हुआ था। सन् 1857 की आजादी की जो लड़ाई थी वह हार जाने के कारण अंग्रेजों ने हरियाणा को चार टुकड़ो में

बांट दिया था, इस का कुछ हिस्सा पंजाब के साथ मिला दिया, कुछ यू0 पी0 के साथ मिला दिया, कुछ रजवाड़ो को दे दिया और बाकी का कुछ इलाका देहली के आसपास का अंग्रेजों ने दिल्ली के साथ रख लिया। तो इस तरह हम बहुत देर से पिस रहे थे। हमारे हरियाणा में जागृति लाने का बहुत बड़ा हिस्सा संत फतेह सिंह जी का हैं और उनकी जद्दोहद से ही हरियाणा के लोगों की नींद खुली थी। इसलिए मैं उनको श्रद्धांजलि भेट करता हूं। उन्होंनें कोशिश करके हमें जागृत किया था। एक बार तो ऐसे हालात हुये थे कि शायद हरियाणा का नाम ही न रहे। उस समय गुलजारी लाल नन्दा, गृह मंत्री ने अपने भाषण में लोक सभा में यह कहा था कि पंजाब के अन्दर हम पंजाबी स्पीकिंग एरिया कार्व करके पंजाबी सूबा बनायेंगे। तो हरियाणा को इस बात का अनुभव हुआ कि यदि हम ने कोशिश न की तो हरियाणा का नाम ही नहीं रहेगा, हरियाणा को और टुकड़ो में बांट दिया जायेगा। तो हम सभी ने अन्दोलन किया और मैं समझता हूं कि इस सारी बात का श्रेय सन्त फतेह जी को जाता हैं। इन शब्दों के साथ में इनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इसके बाद कर्नल बेद रत्न मोहन के बारे में कुछ विचार रखना चाहता हूं। वे एक बहुत बढ़े इंडिस्ट्रियलिस्ट थे और उन्होनें बहुत बड़े–बड़े उघोग चलाये। कुछ भाई यह कह सकते हैं कि उन्होंनें शराब का उद्योग बड़ा चलाया था जो कि देश के लिए अच्छा समझाा जाता। किसी ने उनको यह बात कही भी थी कि

आपने उद्योग तो चलाया लेकिन ज्यादा शराब का चलाया, यदि कोई और उद्योग चलाते तो देश की ज्यादा सेवा होती। उन्होनें जवाब दिया था कि मैं न चाहता हुआ भी यह शराब की इंडस्ट्रीज चला रहा हूं। क्योंकि देश में लोगों को शराब पीने की आदत पड़ चुकी हैं इसलिये (4.P.M.) शराब बाहर से मंगानी पड़ती हैं और उसके मंगाने के लिये फार्न एक्सचेंज खर्च करनी पड़ती हैं तो उस कीमती फार्न करैंसी को बचाने के लिये मैं यह उद्योगो चला रहा हूं मुझे पता लगा हैं वे खुद शराब नहीं पीते थे। वह बहुत बड़े उद्योगपति थे और इसके साथ–साथ एक निहायत अच्छे इंसान भी थे। ऐसे आदमियों की इस वक्त देश को बहुत आवश्यकता थी लेकिन यह तो परमात्मा की बस की बात हैं इसमें कोई और क्या कर सकता हैं मुझे उनके निधन का बहुत शोक हैं और मैं उनके प्रति श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूं। दूसरे सज्जनों के बारे में मुझे इतना ज्यादा पता नहीं हैं लेकिन फिर भी अपने–अपने दायरे में इन्होनें काफी काम किया हैं इसलिये वे लोगों की निगाह में चढ़े हैं। तो जिन महानुभवो के नाम इस सूची में आये हैं उन सब को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अपने सब साथियों से भी निवेदन करता हूं कि वे इन सब महापुरूष को श्रद्धांजलि अर्पित करें।

श्री के0 एल0 गुलाटीः स्पीकर साहब, हमारे सामने जो यह शोक प्रस्ताव आया हैं इस के बारे में उन सब सज्जनों की श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ यह कहना चाहता हूं कि

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।

सामान मां बरस का पल की खबर नहीं।।

इस बारे में गुरू देव जी ने भी फरमाया हैं कि–

जो आया सो चल सी सभ कोई आई बारी हैं।

तो इस संसार से सब ने बारी आने पर चले जाना हैं लेकिन हर एक के अच्छे बुरे कारनामें याद रहते हैं। इस में किसी का बस नहीं सब ने ही यहां से जाना हैं। तो इस मौके पर इन सज्जनों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ मैं सब मैबर साहिबान से अपील करूंगा कि हम सब इन सज्जनों में जो काम अधूरे रह गये हैं उनको पूरा करने की प्रतिज्ञा ले और उनके प्रति यही हमारी सही मायनों में श्रद्धांजलि होगी कि हम इस मौके पर यह व्रत ले कि हम अपने देश, प्रदेश और समाज की तरक्की के लिये जुट कर काम करेंगे, और गरीब हटाने की तरफ पूरा जोर लागाकर काम करेंगे।

श्री गिरीश चन्द्र जोशी (यमुनानगर): स्पीकर साहब यह जो प्रस्ताव आया हैं मैं इसकी ताइद करता हूं और इस लिस्ट में जिन सज्जनों का जिक्र आया हैं उन सब को श्रद्धांजलि पेश करता हूं लेकिन मैं इस मौका पर तीन–चार साथियों का, कर्नल वेद रत्न

मोहन, श्री ऐस0 आर0 बसावड़ा, श्री शिव चण्डिका प्रसाद सिंह और श्री पीताम्बर पंत का खास तौरा पर जिक्र करना चाहता हूँ क्यों कि मेरा इनके साथ किसी न किसी तरह से सम्बन्ध रहा हैं। कर्नल मोहन सिर्फ इंडस्ट्रियल ही नहीं थे वह एक बहुत बढ़े फिल्नथापिस्ट भी थे। उन्होनें देश में जब भी लड़ाई आई उस वक्त जवानों के लिये बहुत काम किया और जगह–जगह उनके लिए कैनटीन खोले। उनकी लखनऊ, रानीखेत और सोलन में ब्रूरीज चलती हैं। पहले इन का नाम डायर मीकन ब्रूरीज होता था लेकिन इन्होंनें उनका नाम चेंज करके मोहन मीकन ब्रूरीज रखा उनके पिता जी भी बहुत अच्छे ख्यालात के थे और उनका असर इन पर पड़ा। श्री वसावड़ा, लेबर मूवमैंट के एक महान व्यक्ति थे और इन्टक में उन्होनें बहूत बड़ा काम किया। इनके साथ श्री खांडू भाई देसाई आंध्र के गवर्नर भी हैं और इनके दो नजदीकी साथी श्री एस0 पी0 दुबे गुजरता के और श्री अम्बेदकर बम्बई के थे जो गुजर गये थे। उनके निधन का इन पर बहुत असर पड़ा और उसी वजह से इनकी सेहत खराब हो गई और हार्ट ट्रबल हो गई। अपने साथियों के निधन को यह बरदाश्त नहीं कर सके और खुद उसी शोक में बीमार पड़ गये। पिछले साल से इन्टक के साथ इनका आपसी मतभेद हो गया था और इन्होंनें टैक्साटाइल लेबर एसोसियेशन को इन्टक से डिसएफिलियेट कर लिया गया था लेकिन बावजूद इस पुलीटिकल मतभेद के हम उनकी बड़ी इज्जत करते थे क्योंकि वह लेबर के एक बहुत निर्भीक सेनानी थी। फिर श्री शिव चंडिका प्रसाद सिंह बिहार से एम0 पी0 रहे और इन्हों ने

भी मजदूरों के क्षेत्रों में काफी काम किया हैं। आप फर्टेलाइजर कारपोरेशन आफ इंडिया के लेबर डायरैक्टर रहे थे। पंत जी को मैं अच्छी तरह से जानता था क्योकि यह मेरे अल्मोंड़ा के थे और मेरे से चार पांच साल बड़े थे और कालिज में एक बहुत अच्छे स्टूडैंट थे। इलाहबाद यूनिवर्सिटी से एम0 ए0 करने के बाद वहां पर ही यह लैक्चरर बने। वहां पर ही यह पंडित नेहरू के नजदीकी आये और इनके दिल में देश की आजादी के लिये बड़ी लग्न थी। इन्होनें अपनी सेवाये कांग्रेस को पेश नजदीकी आये। उस वक्त टाटा बिरला प्लानप बना था। उस प्लान को चलाने के लिये पंत जी ने प्रोफैसर महालनोविस के साथ काम किया। पहले वह प्लानिंग कमीशन के ऐडवाइजर बने और उसके बाद कमीशन के बाद मैंबर रहे। आपका स्वस्थ्य कोई बहुत अच्छा नहीं था लेकिन आपकी बुद्धि बड़ी तीव्र और कुशाग्र थी। तो मैं ज्यादा न कहता हुआ इन सब सज्जनों को जिनके नाम इस लिस्ट में हैं श्रद्धांजलि पेश करता हूं।

श्री गुलाब सिंह जैन (हिसार): स्पीकर साहब यह जो प्रस्ताव आया हैं इसमें 12 परसैनैलटीज के नाम हैं और वैसे तो ये सब ही महान शख्सियत थे और हमें इन सबके निधन से बहुत अफसोस हैं और हम इन सब को श्रद्धांजलि पेश करते हैं लेकिन इस समय पर मैं खास तौर से श्री शिव चण्डिका प्रसाद सिंह का जिक्र करना चाहता हूं। उनके निधन से देश को जो नुक्सान हुआ हैं लेकिन मैं तो उनके निधन को परसनल लौस समझता हूं। जैसा

कि बताया गया कि वह बिहार से एम0 पी0 बने थे, वह छोटे कद के थे लेकिन उनकी बुद्धि बहुत तीव्र थी और उनके अन्दर जो देश भक्ति थी वह तो देखने वाली बात थी। मेरा उनके साथ संपर्क 6–7 साल से था। वह काफी अर्सा से एम0 पी0 चले आ रहे थे। उनके साथ मुझे काफी बात करने का मौका मिलता था। हरियाणा की डिवैल्पमैंट के बारे में वह हमेशा खास तौर से इंट्रैस्ट लिया करते थे। वह कहा करते थे कि देहली में जब भी हरियाणा की बात आती हैं तो उनका ध्यान हमेशा हरियाणा की भलाई की तरफ रहता हैं। हरियाणा वासियों के साथ उनका खास प्रेम था। वह रांची के रहने वाले थे और वहां पर हरियाणा के रहने वाले भी बहुत रहते है। उन सब लोगो के साथ उनका बड़ा प्रेम था। उनके निधन से जहां देश को नुकसान हुआ हैं वहां मैं समझता हूं मुझे तो उनके जाने से एक तरफ से परसनल लौस हुआ हैं। मुझे उनके निधन से बहुत अफसोस हैं और मैं उनको और बाकी सब को श्रद्धांजलि पेश करता हूं।

चौधरी अब्दुर रज्जाक खां (फिरोजपुर झिरका): मोहतरिम स्पीकर साहब, जिन शख्यितों के उठ जाने का इस तहरीक में जिक्र हुआ हैं और जिसके बारे में हम इजहारे अफसोस कर रहे हैं उन के साथ एक और शख्सियत का नाम जोड़ दिया जाये और उनका नाम हैं चौधरी समेर सिंह साबिक, एम0 एल0

ए0, बल्लभगढ़। उनका भी इंतकाल हो गया हैं। इसलिये मैं अर्ज करता हूं कि उनका नाम भी इस तहरीक में जोड़ दिया जाये।

मुख्य मंत्रीः ठीक हैं उनका नाम भी ऐड कर दिया जायें।

अध्यक्षः माननीय सदस्यगण अभी आपके सामने एक शोक प्रस्ताव आया और दिवगंत नेताओं की एक लंबी सूची हमारे सामने मौजूद हैं जिन्होंनें अपने जीवन में इस देश, साहिबान ने जो विचार व्यक्त किये हैं मैं भी उनके साथ आपको शामिल करता हूं और दो शब्द मैं उस महान नेता के बारे में कहना आवश्यक समझता हूं जिनका नाम इस सूची में सबसे ऊपर दर्ज हैं। श्री चक्रवर्ती गोपालाचार्य एक महान नेता ही थे, बल्कि गंभीर नेता थे और सूझ–बूझ रखते थे। वे न केवल एक राजनैतिक नेता ही थे बल्कि एक महान दार्शनिक भी थे। उन्होंनें देश की जो सेवा की वह किसी से छुपी हुई नहीं हैं। वे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निकटतम साथियों में से एक थे। उन्होंनें आजादी हासिल करने में जो वर्णन शब्दों द्वारा कभी नहीं किया जा सकता। वे एक महान नेता थे जिन्होंनें जीवन भर अपनी विलक्षण बुद्धि का चमत्कार दिखाया जिससे भारतवर्ष ही नहीं बल्कि तमाम संसार के लोग प्रभावित थे। उन में असीम शक्ति और क्षमता थी। इतनी बड़ी लम्बी आयु होते हुये भी वे अन्तिम दिनों तक जागरूक रहे और अपनी विचाराधारा से देश को अवगत रखते रहे। उन का निधन

होना हमारे राष्ट्र के लिए ऐसी भारी क्षति और हानि हैं कि जिसको पूरा नहीं किया जा सकता

इनके अतिरिक्त इस सूची में अन्य नेताओं का जिक्र हैं जिनमें से कुछ ने मजदूर क्षेत्र में और कुछ ने आर्थिक क्षेत्र में काम किया। ये बहुत अच्छे राजनीतिज्ञ और दार्शनिक थे। इन सबके निधन से हमारे देश को जो क्षति हुई हैं उसको पूरा नहीं किया जा सकता। हमें इनके निधन पर अपार दुःख हैं। इन शब्दों के साथ इन तमाम नेताओं के स्वर्गवास हो जाने पर मैं अपनी श्रद्धाजलिं अर्पित करते हुये आप द्वारा व्यक्त किये गये विचार और भावनाओं को इन नेताओं के शोक सन्तप्त परिवारों तक पहुचाने का प्रबन्ध करूंगा। अब मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि आप श्रद्धजंलि इन नेताओ के प्रति भेंट करने के लिए खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण करें।

इस समय सभी सदस्यों ने खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण किया

सदन की मेज पर रखे जाने वाले कागज–पत्र

Transport Minsiter (Col. Maha Singh): Sir, I beg to lay on the Table of the House a copy of the Punjab Motor

Vehicles Taxation (Haryana Amendment) Ordinance, 1973 (Haryana Ordinance No.1 of 1973)

Education Minster (Sh. Maru Singh Malik): Sir, I beg to lay on the Table of the House a copy of the Haryana Official Language (Amendment) Ordinance, 1973 (Haryana Ordinance No. 2 of 1973)

कृषि मन्त्री चौधरी भजन लालः मैं भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा, 619–ए के अधीन की गई अपेक्षा के अनुसार हरियाणा एग्रो–इंडस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड के वर्ष 1970–71 के चतुर्थ वार्षिक प्रतिवेदन तथा लेखों की एक प्रति मेज पर रखता हूं।

सदन की मेज पर पुनः रखे जाने वाले कागज–पत्र

Chief Minister : Sir, I beg to re-lay on on the Table a copy each of the following notifications-

Notification No. 1450-pol (2p), dated the 4th April, 1972, regarding the Haryana Minister Travelling Allowances Rules, 1972, as required under of Minister' Act, 1970.

Notification No. 1416-pol (2p)-72, dated the 4th April, 1972, issued undedr Article 283(2) of the Contitution of India.

श्री अध्यक्षः सभा कल 6 मार्च, 1973 के साढ़े नौ बजे प्रातः तक के लिए स्थागित की जाती हैं।

(4.17 P.M.)

इस समय सदन की बैठक मंगलवार, दिनांक 6 मार्च, 1973 प्रातः बजे तक के लिये स्थागित हुई।